हिन्दी दिवस विशेषांक

द ग्लोबल टाइम्स

सितम्बर 14, 2026

सपनों की उड़ान

सपने हमारी अवचेतन मन की अभिव्यक्ति हैं

आकृति शर्मा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
पुष्प विहार, कक्षा 11 बी

सपने मानव जीवन का वह अमूल्य हिस्सा हैं जो हमें साधारण से असाधारण बनाने की शक्ति रखते हैं। सपनों की उड़ान का अर्थ है उन अदृश्य पंखों से ऊँचाइयों को छूना, जो हमारी कल्पना और महत्वाकांक्षा से जन्म लेते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि एक छोटा-सा सपना कैसे दुनिया बदल सकता है? यह निबंध सपनों की इस उड़ान पर प्रकाश डालेगा, जहाँ हम समझेंगे कि सपने न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सपनों की शुरुआत बचपन से होती है। बच्चे बिना किसी बंधन के सपने देखते हैं- कभी अंतरिक्ष यात्री बनना, कभी वैज्ञानिक या कलाकार। मनोविज्ञान के अनुसार, सपने हमारी अवचेतन मन की अभिव्यक्ति हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड ने सपनों को 'रॉयल रोड टू द अनकॉन्शस' कहा था, अर्थात अवचेतन तक पहुँचने का राजमार्ग। लेकिन हम बात कर रहे हैं जागृत सपनों की, जो हमें लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हैं। सपने देखना आसान है लेकिन उनकी उड़ान भरना चुनौतीपूर्ण। इसके लिए दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत और सकारात्मक सोच की आवश्यकता होती है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 एपीजे अब्दुल कलाम अपनी पुस्तक 'विंग्स ऑफ फायर' में सपनों की उड़ान पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहते हैं, ''सपने वे नहीं हैं जो नींद में आते हैं, बल्कि

वे हैं जो हमें सोने नहीं देते।'' डॉ0 कलाम ने गरीबी और कठिनाइयाँ पार करते हुए इसरो और डीआरडीओ में महत्त्वपूर्ण योगदान किया, जिसके चलते भारत आत्मनिर्भर मिसाइल तकनीक विकसित करने में सफल हुआ। इसी प्रकार, ओपरा विन्फ्रे ने बचपन की गरीबी और संघर्षों को पार करते हुए एक प्रभावशाली मीडिया साम्राज्य स्थापित किया। इन जीवंत कहानियों से साफ है कि कैसे सपने बाधाओं को अवसरों में बदलने की क्षमता रखते हैं।

सपनों की उड़ान में शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा हमें ज्ञान प्रदान करती है, जिससे हम अपने लक्ष्यों की ओर बढ़कर अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। कई बार असफलता आती है, जैसे थॉमस एडिसन ने बल्ब बनाने में 1000 बार असफल हुए लेकिन उन्होंने कहा, ''मैं असफल नहीं हुआ, मैंने 1000 तरीके खोजे जो काम नहीं करते।'' असफलता सपनों की उड़ान को मजबूत बनाती है, यदि हम उससे सीखें।

सपनों की उड़ान सामाजिक परिवर्तन भी लाती है। महात्मा गाँधी ने आजादी का सपना देखा, जिसने लाखों को प्रेरित किया। आज जलवायु परिवर्तन, लिंग समानता जैसे मुद्दों पर सपने देखने वाले युवा, जैसे- ग्रेटा थुनबर्ग, दुनिया बदल रहे हैं लेकिन सपनों को उड़ान देने के लिए सही दिशा जरूरी है। नकारात्मक सपने विनाश लाते हैं। इसलिए, सपनों को नैतिकता और मानवता से जोड़ना चाहिए।

सपनों की उड़ान हमें याद दिलाती है कि जीवन एक यात्रा है, जहाँ सपने पथप्रदर्शक हैं। यदि आप सपने देखते हैं, तो उन्हें हकीकत बनाने के लिए कदम उठाएँ। याद रखें, हर बड़ा बदलाव एक छोटे सपने से शुरू होता है। तो, अपने सपनों को पंख दें, उड़ान भरें और आकाश को छूएँ। इस उड़ान में जोश, जुनून और जज्बा आपका साथी बनेगा। सपने देखिए, क्योंकि सपने ही जीवन की सच्ची उड़ान हैं! जी टी

हिन्दी- विविधता का एक सूत्र

डॉ० (श्रीमती) अमिता चौहान
चेयरपर्सन

आज हमारा देश हिन्दी दिवस मना रहा है और हमारे लिए अत्यन्त हर्ष की बात है कि हर वर्ष ग्लोबल टाइम्स के हिन्दी संस्करण के माध्यम से हम भी देश के इस भाषाई उत्सव में भागीदार बनते हैं।

हिन्दी केवल भाषा ही नहीं अपितु भारत की विविधता में एकता का एक बहुमूल्य सूत्र है, हमारी पहचान है। किन्तु इस पहचान के भी अपने छोटे बड़े कई अभिज्ञान हैं जो इसकी हर राज्य में बदलते शब्दों और विविध प्रकार की बोलियों में निहित है। रोचक बात यह है कि इन अभिज्ञानों के स्त्रोत हैं हमारी क्षेत्रीय एवं लोक भाषाएँ, अनगिनत लोक कथाएँ कुछ सुनी, कुछ पढ़ीं, कुछ सिर्फ नाटक या नृत्य कलाओं द्वारा सम्प्रेषित हुईं। 'चालाक कौवा' से लेकर 'घमंडी बन्दर' तक कितनी ही कहानियाँ हैं जिनका वर्णन भारत के विभिन्न राज्यों के क्षेत्रीय साहित्य और भाषा में भी पाया जाता है।

भारत के हर राज्य की भाषा और साहित्य अपने में अनेक विविधिताएँ समेटे हुए हैं और यही विविधता मूल है, हिन्दी की विविधता का। चाहे शब्द हों, चाहे अलग बोलियाँ हों, चाहे आम बोलचाल, हिन्दी पर क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट प्रतिबिंबित होता है। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम का कहना था कि "भारत विविधताओं की भूमि है और संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं का मिश्रण इसे सचमुच अद्वितीय बनाता है।

इसी विशिष्टता और विविधता में निहित हिन्दी और भारत की पहचान बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि आज के तेजी से बदलते परिवेश में हमें बच्चों को उनकी क्षेत्रीय या मातृभाषाओं का भी पठन कराया जाए। हालाँकि बच्चे अपने परिवार और परिवेश में क्षेत्रीय भाषा बोलचाल में सीख लेते हैं किन्तु विद्यालयों में क्षेत्रीय साहित्य और लोक कथाओं का पठन और उन पर चर्चा करने से बच्चों की सोच और समझ का दायरा बढ़ता है, उन्हें साहित्यिक बोध के साथ ही विविधता बोध, सांस्कृतिक विरासत का बोध और स्वयं के भाषा मूल्यों का भी बोध होता है।

ऐमिटी में हम कक्षा प्रस्तुतियों, क्षेत्रीय सांस्कृतिक समारोहों, क्षेत्रीय भाषा के लेखकों से मुलाकात इत्यादि माध्यमों द्वारा बच्चों में भारत की भाषाई विविधता का ज्ञान बोध कराते रहते हैं। और यह बोध ही उनमें आगे हिन्दी के प्रति प्रेम जगाने और भारत की असीम विविधता को विश्व-पटल पर अंकित करने में अहम् भूमिका निभाता है। हिन्दी द्वारा एक सूत्र में पिरोयी हुई भारत की यह भाषाई विविधता में एकता ही मूल है 21वीं सदी में विकसित भारत की सांस्कृतिक विरासत और धरोहर को हमारे युवाओं द्वारा आने वाले समय में सँजों के रखने की।

ईमानदारी, मेहनत और सकारात्मक सोच जीवन में सफलता दिलाती है

आराध्या सिंह, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
जगदीशपुर, कक्षा 10 अ

प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार, डॉ. दर्शन सिंह 'आशट' ने अपना सम्पूर्ण जीवन बच्चों के लिए प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक साहित्य लिखने में समर्पित किया है। आपकी 70 से अधिक पुस्तकें, हिन्दी, पंजाबी, उर्दू सहित अन्य कई भाषाओं में प्रकाशित और अनुदित हुई हैं। वर्ष 2011 में आपके उत्कृष्ट बाल साहित्य (कविता संग्रह) के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से आपको सम्मानित किया गया था। साथ ही, पंजाबी बाल साहित्य में आपके आजीवन योगदान के लिए भी आपको राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'मेहनत की कमाई का सुख', 'गोपी लौट आया', नहीं चाहिए ऐसा उपहार', 'शिशु गीतमाला' और 'बड़ा कौन' आपकी लोकप्रिय कहानियाँ हैं। आपकी कहानियाँ नैतिक मूल्यों और जीवन

बाल साहित्यकार, डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

की सीख बहुत ही सरल अंदाज में सिखाती हैं। द ग्लोबल टाइम्स की छात्रा रिपोर्टर ने उनसे बात की। प्रस्तुत है प्रमुख अंशः

आपने बाल साहित्य को ही अपने लेखन का मुख्य क्षेत्र क्यों चुना?

बच्चों का मन बहुत निर्मल और सच्चा होता है। मैं चाहता था कि कहानियों और कविताओं के माध्यम से बच्चों को अच्छे संस्कार, शिक्षा और जीवन के मूल्य मिलें। इसलिए मैंने बाल साहित्य को अपना माध्यम बनाया।

आपकी पहली पुस्तक कौन-सी थी और उसे लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

मेरी प्रारम्भिक पुस्तक 'चंगियाँ आदताँ' है। बच्चों की अच्छी आदतों और व्यवहार को ध्यान में रखकर मैंने इसे लिखा था।

आपने हिन्दी और पंजाबी दोनों भाषाओं में लेखन किया है। दोनों भाषाओं में लिखने का अनुभव कैसा रहा?

दोनों भाषाएँ मेरी आत्मा के बहुत करीब हैं। पंजाबी मेरी मातृभाषा है और हिन्दी देश को जोड़ने वाली भाषा। दोनों में लिखकर मुझे अधिक बच्चों तक पहुँचने का अवसर मिला।

कौन-सी पुस्तक आपको अधिक प्रिय है?

हर पुस्तक मेरे लिए अपने बच्चे जैसी है लेकिन 'मेहनत की कमाई' और 'पापा, अब ऐसा नहीं होगा' जैसी रचनाएँ बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय रहीं।

आपको इतने सारे पुरस्कार और सम्मान मिले। उस समय आपको कैसा महसूस हुआ?

पुरस्कार लेखक को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। जब बच्चों और पाठकों का प्रेम मिलता है, वही मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान होता है।

आज के बच्चों में पढ़ने की आदत कम होती जा रही है। आप उन्हें क्या संदेश देना चाहेंगे?

मोबाइल और इंटरनेट का सही उपयोग करें लेकिन पुस्तकों से दोस्ती जरूर रखें। किताबें हमें सोचने, समझने और बेहतर इंसान बनने की शक्ति देती हैं।

क्या आपको बचपन से ही लेखन का शौक था?

जी हाँ, बचपन से ही मुझे कहानियाँ पढ़ने और लिखने में रुचि थी। विद्यालय के दिनों में ही मैंने छोटी-छोटी रचनाएँ लिखनी शुरू कर दी थीं।

जो बच्चे लेखक बनना चाहते हैं, उन्हें आप क्या सलाह देंगे?

सबसे पहले खूब पढ़ें। अपने आसपास की घटनाओं को ध्यान से देखें और नियमित लिखने का अभ्यास करें। मेहनत और धैर्य से ही अच्छा लेखक बना जा सकता है।

अंत में हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कोई प्रेरणादायक संदेश।

हमेशा अपने माता-पिता और शिक्षकों का सम्मान करें। ईमानदारी, मेहनत और सकारात्मक सोच जीवन में सफलता दिलाती है। आप सभी बच्चों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ। जी टी